

रविवार 20 अप्रैल, 2025

विषय— प्रायश्चित का सिद्धांत

स्वर्ण पाठ: प्रकाशित वाक्य 12: 10

"कि अब हमारे परमेश्वर का उद्धार, और सामर्थ, और राज्य, और उसके मसीह का अधिकार प्रगट हुआ है।"

उत्तरदायी अध्ययन: यूहन्ना 10: 11, 14, 15, 17, 18, 27-30

- 11 अच्छा चरवाहा मैं हूँ; अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है।
14 अच्छा चरवाहा मैं हूँ; जिस तरह पिता मुझे जानता है, और मैं पिता को जानता हूँ।
15 इसी तरह मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ, और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं, और मैं भेड़ों के लिये अपना प्राण देता हूँ।
17 पिता इसलिये मुझ से प्रेम रखता है, कि मैं अपना प्राण देता हूँ, कि उसे फिर ले लूँ।
18 कोई उसे मुझ से छीनता नहीं, वरन मैं उसे आप ही देता हूँ: मुझे उसके देने का अधिकार है, और उसे फिर लेने का भी अधिकार है: यह आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली है॥
27 मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं।
28 और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, और वे कभी नाश न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।
29 मेरा पिता, जिस ने उन्हें मुझ को दिया है, सब से बड़ा है, और कोई उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता।
30 मैं और पिता एक हैं।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यूहन्ना 3: 16

- 16 क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।

2. मत्ती 4: 23

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

23 और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।

3. यूहन्ना 12: 1, 9-11, 17, 19 (से?), 23, 27-35 (से 2nd), 36 (वह) (से 1st), 37, 42-44, 50

- 1 फिर यीशु फतह से छः दिन पहिले बैतनिय्याह में आया, जहां लाजर था: जिसे यीशु ने मरे हुआओं में से जिलाया था।
- 9 यहूदियों में से साधारण लोग जान गए, कि वह वहां है, और वे न केवल यीशु के कारण आए परन्तु इसलिये भी कि लाजर को देखें, जिसे उस ने मरे हुआओं में से जिलाया था।
- 10 तब महायाजकों ने लाजर को भी मार डालने की सम्मति की।
- 11 क्योंकि उसके कारण बहुत से यहूदी चले गए, और यीशु पर विश्वास किया॥
- 17 तब भीड़ के लोगों ने जो उस समय उसके साथ थे यह गवाही दी कि उस ने लाजर को कब्र में से बुलाकर, मरे हुआओं में से जिलाया था।
- 19 तब फरीसियों ने आपस में कहा, सोचो तो सही कि तुम से कुछ नहीं बन पड़ता: देखो, संसार उसके पीछे हो चला है॥
- 23 इस पर यीशु ने उन से कहा, वह समय आ गया है, कि मनुष्य के पुत्र कि महिमा हो।
- 27 जब मेरा जी व्याकुल हो रहा है। इसलिये अब मैं क्या कहूं? हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा? परन्तु मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुंचा हूं।
- 28 हे पिता अपने नाम की महिमा कर: तब यह आकाशवाणी हुई, कि मैं ने उस की महिमा की है, और फिर भी करूंगा।
- 29 तब जो लोग खड़े हुए सुन रहे थे, उन्होंने कहा; कि बादल गरजा, औरों ने कहा, कोई स्वर्गदूत उस से बोला।
- 30 इस पर यीशु ने कहा, यह शब्द मेरे लिये नहीं परन्तु तुम्हारे लिये आया है।
- 31 अब इस जगत का न्याय होता है, अब इस जगत का सरदार निकाल दिया जाएगा।
- 32 और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खींचूंगा।
- 33 ऐसा कहकर उस ने यह प्रगट कर दिया, कि वह कैसी मृत्यु से मरेगा।
- 34 इस पर लोगों ने उस से कहा, कि हम ने व्यवस्था की यह बात सुनी है, कि मसीह सर्वदा रहेगा, फिर तू क्यों कहता है, कि मनुष्य के पुत्र को ऊंचे पर चढ़ाया जाना अवश्य है? यह मनुष्य का पुत्र कौन है?
- 35 यीशु ने उन से कहा, ज्योति अब थोड़ी देर तक तुम्हारे बीच में है, जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है तब तक चले चलो।
- 36 ... तुम ज्योति के सन्तान होओ॥
- 37 और उस ने उन के साम्हने इतने चिन्ह दिखाए, तौभी उन्होंने उस पर विश्वास न किया।

- 42 तौभी सरदारों में से भी बहुतों ने उस पर विश्वास किया, परन्तु फरीसियों के कारण प्रगट में नहीं मानते थे, ऐसा न हो कि आराधनालय में से निकाले जाएं।
- 43 क्योंकि मनुष्यों की प्रशंसा उन को परमेश्वर की प्रशंसा से अधिक प्रिय लगती थी॥
- 44 यीशु ने पुकारकर कहा, जो मुझ पर विश्वास करता है, वह मुझ पर नहीं, वरन मेरे भेजने वाले पर विश्वास करता है।
- 50 और मैं जानता हूं, कि उस की आज्ञा अनन्त जीवन है इसलिये मैं जो बोलता हूं, वह जैसा पिता ने मुझ से कहा है वैसा ही बोलता हूं॥

4. यूहन्ना 13: 1

- 1 फसह के पर्व से पहिले जब यीशु ने जान लिया, कि मेरी वह घड़ी आ पहुंची है कि जगत छोड़कर पिता के पास जाऊं, तो अपने लोगों से, जो जगत में थे, जैसा प्रेम वह रखता था, अन्त तक वैसा ही प्रेम रखता रहा।

5. यूहन्ना 14: 9 (से कहा), 12 (वह), 13-15, 27, 28 (अगर), 29, 31

- 9 यीशु कहा...
- 12 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, वरन इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं।
- 13 और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही मैं करूंगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो।
- 14 यदि तुम मुझ से मेरे नाम से कुछ मांगोगे, तो मैं उसे करूंगा।
- 15 यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।
- 27 मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन न घबराए और न डरे।
- 28 यदि तुम मुझ से प्रेम रखते, तो इस बात से आनन्दित होते, कि मैं पिता के पास जाता हूं क्योंकि पिता मुझ से बड़ा है।
- 29 और मैं ने अब इस के होने से पहिले तुम से कह दिया है, कि जब वह हो जाए, तो तुम प्रतीति करो।
- 31 परन्तु यह इसलिये होता है कि संसार जाने कि मैं पिता से प्रेम रखता हूं, और जिस तरह पिता ने मुझे आज्ञा दी, मैं वैसे ही करता हूं: उठो, यहां से चलें॥

6. मत्ती 27: 1, 33, 35 (वे) (से 1st), 55, 56 (से 1st)

- 1 जब भोर हुई, तो सब महायाजकों और लोगों के पुरनियों ने यीशु के मार डालने की सम्मति की।
- 33 और उस स्थान पर जो गुलगुता नाम की जगह अर्थात् खोपड़ी का स्थान कहलाता है पहुंचकर।

- 35 ... तब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया।
55 वहां बहुत सी स्त्रियां जो गलील से यीशु की सेवा करती हुई उसके साथ आई थीं, दूर से यह देख रही थीं।
56 उन में मरियम मगदलीली थी।

7. मरकुस 16: 9-11, 14, 15, 17 (से 2nd), 18-20

- 9 सप्ताह के पहिले दिन भोर होते ही वह जी उठ कर पहिले पहिल मरियम मगदलीनी को जिस में से उस ने सात दुष्टात्माएं निकाली थीं, दिखाई दिया।
10 उस ने जाकर उसके साथियों को जो शोक में डूबे हुए थे और रो रहे थे, समाचार दिया।
11 और उन्होंने यह सुनकर की वह जीवित है, और उस ने उसे देखा है प्रतीति न की॥
14 पीछे वह उन ग्यारहों को भी, जब वे भोजन करने बैठे थे दिखाई दिया, और उन के अविश्वास और मन की कठोरता पर उलाहना दिया, क्योंकि जिन्होंने ने उसके जी उठने के बाद उसे देखा था, इन्होंने उन की प्रतीति न की थी।
15 और उस ने उन से कहा, तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।
17 और विश्वास करने वालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे।
18 नई नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे, और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएं तौभी उन की कुछ हानि न होगी, वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएंगे।
19 निदान प्रभु यीशु उन से बातें करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया, और परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया।
20 और उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचार किया, और प्रभु उन के साथ काम करता रहा, और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ साथ होते थे वचन को, दृढ़ करता रहा। आमीन॥

8. मत्ती 5: 8

- 8 धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 583: 10-11

मसीह। भगवान की दिव्य अभिव्यक्ति, जो अवतार त्रुटि को नष्ट करने के लिए मांस के लिए आती है।

2. 18: 1-5

प्रायश्चित परमेश्वर के साथ मनुष्य की एकता का उदाहरण है, जिससे मनुष्य ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम को दर्शाता है। नासरत के यीशु ने पिता के साथ मनुष्य की एकता को सिखाया और प्रदर्शित किया, और इसके लिए हम उसे अंतहीन श्रद्धांजलि देते हैं।

3. 136: 1-10 (से.)

यीशु ने अपने चर्च की स्थापना की और मसीह-उपचार की आध्यात्मिक नींव पर अपने मिशन को बनाए रखा। उन्होंने अपने अनुयायियों को सिखाया कि उनके धर्म में एक दिव्य सिद्धांत है, जो त्रुटि को बाहर निकालता है और बीमार और पापी दोनों को ठीक करता है। उन्होंने दावा किया कि कोई भी खुफिया, कार्रवाई, और न ही जीवन भगवान से अलग है। अपने ऊपर आए उत्पीड़न के बावजूद, उसने शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से पुरुषों को बचाने के लिए अपनी दिव्य शक्ति का इस्तेमाल किया।

तब भी और अब भी यही प्रश्न है कि यीशु ने बीमारों को कैसे चंगा किया? इस प्रश्न के उनके उत्तर को दुनिया ने अस्वीकार कर दिया।

4. 28: 1-6

फरीसियों ने ईश्वरीय इच्छा को जानने और सिखाने का दावा किया, लेकिन उन्होंने केवल यीशु के मिशन की सफलता में बाधा डाली। यहां तक कि उनके कई छात्र भी उनके रास्ते में खड़े थे। यदि मास्टर ने एक छात्र को नहीं लिया था और भगवान की अनदेखी सत्य सिखाया था, तो उसे क्रूस पर नहीं चढ़ाया जाता था।

5. 23: 5-7 (से 2nd.)

भगवान के क्रोध को उनके प्यारे पुत्र पर व्रत किया जाना चाहिए, जो दिव्य अप्राकृतिक है। ऐसा सिद्धांत मानव निर्मित है।

6. 286: 1-11

किसी मानवीय सिद्धांत पर विश्वास करके सत्य की खोज करना, अनन्त को समझना नहीं है। हमें परिमित, परिवर्तनशील और नश्वर के माध्यम से अपरिवर्तनीय और अमर की खोज नहीं करनी चाहिए, और इसलिए प्रदर्शन के बजाय विश्वास पर निर्भर रहना चाहिए, क्योंकि यह विज्ञान के ज्ञान के लिए घातक है। सत्य की समझ सत्य में पूर्ण विश्वास देती है, और आध्यात्मिक समझ सभी होमबलि से बेहतर है।

मास्टर ने कहा, "बिना मेरे द्वारा कोई पिता (होने का दिव्य सिद्धांत) के पास नहीं पहुंच सकता।" मसीह, जीवन, सत्य, प्रेम के बिना; क्योंकि मसीह कहता है: "मार्ग मैं हूं."

7. 34: 18-24 (से)

अनुभवी सभी शिष्यों के माध्यम से, वे अधिक आध्यात्मिक हो गए और बेहतर समझा कि मास्टर ने क्या सिखाया था। उनका पुनरुत्थान भी उनका पुनरुत्थान था। इससे उन्हें खुद को और दूसरों को आध्यात्मिक नीरसता से दूर रखने और ईश्वर में असीम संभावनाओं की धारणा में अंधे होने में मदद मिली। उन्हें इस जल्दी की आवश्यकता थी,

8. 134: 26-32

यीशु ने कहा: "मुझे पता था कि तू मुझे हमेशा सुनता है," और उस ने मरे हुआ में से लाजर को जीवित कर दिया, तूफान को रोक दिया, बीमारों को चंगा किया, पानी पर चला गया। भौतिक प्रतिरोध पर आध्यात्मिक शक्ति की श्रेष्ठता में विश्वास करने का दिव्य अधिकार है।

एक चमत्कार भगवान के नियम को पूरा करता है, लेकिन उस कानून का उल्लंघन नहीं करता है।

9. 24: 27-31

कूस की प्रभावकारिता व्यावहारिक स्नेह और भलाई में निहित है जो मानव जाति के लिए प्रदर्शित हुई। सच्चाई पुरुषों के बीच रह चुकी थी; लेकिन जब तक उन्होंने देखा कि इसने अपने गुरु को कब्र पर विजय प्राप्त करने के लिए सक्षम कर दिया है, तब तक उनके अपने शिष्य इस तरह के आयोजन को संभव नहीं मानते थे।

10. 36: 10-14

यीशु ने शर्म सहन की, ताकि वह अपने बहुमूल्य उपहार को बांझ जीवन में डाल सके। उसका सांसारिक इनाम क्या था? उसे सभी ने त्याग दिया था, सिवाय उसके प्रिय शिष्य यूहन्ना और कुछ महिलाओं के, जो उसके कूस की छाया में चुपचाप शोक में झुक गईं।

11. 20: 20-23

फिर भी उन्होंने यह नहीं कहा कि ईश्वरीय आदेश का पालन करना और ईश्वर पर भरोसा रखना, यह जानते हुए भी पाप से पवित्रता के मार्ग को बदलना और पीछे हटाना है।

12. 26: 1-6 (से)

जब हम यीशु को मानते हैं, और जो कुछ उन्होंने नश्वर के लिए किया, उसके लिए हृदय से आभार प्रकट करता है, — अपने प्यार के रास्ते को केवल महिमा के सिंहासन तक फैलाकर हमारे लिए रास्ता तलाश करने वाली व्यर्थ पीड़ा में, — फिर भी यीशु ने हमें व्यक्तिगत अनुभव नहीं दिया, अगर हम उसकी आज्ञाओं का ईमानदारी से पालन करें।

13. 138: 18-22

मसीहियों को आज भी उसी प्रकार सीधे आदेश दिए गए हैं, जैसे पहले थे, कि वे मसीह के समान बनें, मसीह-आत्मा को धारण करें, मसीह के उदाहरण का अनुसरण करें, तथा बीमारों के साथ-साथ पापियों को भी चंगा करें।

14. 37: 27-31

ये अनिवार्य आदेश सुनें: *"इसलिये चाहिये कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है॥" "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो!" "बीमारों को चंगा करो।"*

15. 494: 11-15

यह कल्पना करना ठीक नहीं है कि यीशु ने दिव्य शक्ति का चयन केवल संख्या के लिए या सीमित समय के लिए ठीक करने के लिए किया, क्योंकि सभी मानव जाति के लिए और सभी समयों में, दिव्य प्रेम सभी अच्छे की आपूर्ति करता है।

कृपा का चमत्कार प्रेम का कोई चमत्कार नहीं है।

16. 21: 1-14

यदि सत्य आपके दैनिक चलने और वार्तालाप में त्रुटि पर काबू पा रहा है, तो आप अंततः कह सकते हैं, "मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं मैं ने विश्वास की रखवाली की है।" क्योंकि आप एक बेहतर इंसान हैं। यह सत्य और प्रेम के साथ एक-में-भाग में हमारा हिस्सा है। ईसाई, श्रम और प्रार्थना करना जारी नहीं रखते हैं, क्योंकि दूसरे की भलाई, पीड़ा और जीत की उम्मीद है, कि वे उसके सद्भाव और इनाम तक पहुंचेंगे।

यदि शिष्य आध्यात्मिक रूप से आगे बढ़ रहा है, तो वह अंदर प्रवेश करने का प्रयास कर रहा है। वह भौतिक दृष्टि से लगातार दूर होता जाता है, और आत्मा की अपूर्ण चीजों की ओर देखता है यदि वह ईमानदार है, तो वह शुरू से ही सबसे अधिक लाभ में रहेगा, और जब तक वह खुशी के साथ अपना कोर्स पूरा नहीं कर लेता, तब तक वह हर दिन सही दिशा में थोड़ा-थोड़ा हासिल करेगा।

17. 24: 11-13

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंडी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

वह जिस पर "प्रभु का भुजबल" प्रकट हुआ है, वह हमारे समाचार पर विश्वास करेगा, और पुनर्जन्म के साथ जीवन की नवीनता में उठेगा।

18. 45: 16-21

भगवान की जय हो, और संघर्षशील दिलों को शांति मिले! मसीह ने मानव आशा और विश्वास के द्वार से पत्थर को लुढ़का दिया, और ईश्वर में जीवन के रहस्योद्घाटन और प्रदर्शन के माध्यम से, उन्हें मनुष्य के आध्यात्मिक विचार और उनके दिव्य सिद्धांत, प्रेम के साथ संभवतया एक-मानसिक रूप से उन्नत किया।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वान्नी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6